प्रकाशन तिथि : 15 जुलाई, 2021
प्रेषण तिथि : 19 जुलाई, 2021

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 25 | अंक 09 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

संघ में पीढी परिवर्तन, नेतृत्व में औपचारिक बदलाव

(श्री क्षत्रिय युवक संघ की केन्द्रीय बैठक संपन्न)

केन्द्रीय टीम @ आलोक आश्रम

श्री क्षत्रिय युवक संघ की सुदीर्घ नेतृत्व परंपरा है। संघ के संस्थापक पूज्य तनसिंह जी ने लंबे समय तक संघ को नेतृत्व प्रदान किया। इस बीच उन्होंने श्रद्धेय आयुवानसिंह जी को नेतृत्व सौंपा व उनके नेतृत्व में स्वयं ने कार्य किया। कालांतर में पुनः संघप्रमुख बने एवं 1969 तक संघ का औपचारिक नेतृत्व किया। अपने देहावसान से 10 वर्ष पूर्व 1969 में पूज्य नारायण सिंह जी को औपचारिक रूप से संघप्रमुख बनाकर स्वयं मार्गदर्शक की भूमिका में आये और 1979 में देहावसान तक अनौपचारिक नेतृत्व प्रदान करते रहे। पूज्य नारायण सिंह जी के देहावसान के पश्चात 1989 में माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर संघप्रमुख निर्वाचित हुए एवं लंबे समय तक संघप्रमुख के रूप में औपचारिक रूप से अपने नेतृत्व में संघ को सभी क्षेत्रों में ऊंचाइयां प्रदान की। विगत वर्षों में आयु व स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के चलते बार बार आप इस उत्तरदायित्व से औपचारिक रूप से मुक्त हो नये नेतृत्व को कार्य सौंपने की ईच्छा प्रकट करते रहे हैं। वर्ष 2020 में प्रस्तावित संघप्रमुख चुनावों से स्वयं को अलग रखने के लिए भी आपने उपयुक्त नियम बना लिए थे लेकिन कोरोना महामारी के चलते ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर न होने के कारण ऐसा संभव नहीं हो पाया। इस वर्ष भी वह शिविर नहीं हो पाया इसलिए इस बार भी चुनाव संभव नहीं हुए। इस बीच विगत 8 व 9 जनवरी को आलोक आश्रम बाड़मेर में आयोजित केन्द्रीय बैठक में आपने फिर ऐसी ही इच्छा जाहिर की। आपके बार बार इच्छा जाहिर करने के कारण उस बैठक में 9 जनवरी को संघप्रमुख चुनाव हेतु 2019 के ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर गनोड़ा में नियुक्त चुनाव आयुक्त गजेंद्र सिंह आऊ ने एक प्रस्ताव रखा कि, 'क्योंकि महामारी के कारण उत्पन्न परिस्थितियों में शिविर संभव नहीं है अतः माननीय संघप्रमुख श्री को ही आगामी संघप्रमुख के चुनाव/ मनोनयन बाबत निर्णय लेने के लिए अधिकृत किया जाए।' उपस्थित सभी सहयोगियों ने सर्वसम्मति से इसे स्वीकार किया लेकिन माननीय संघप्रमुख श्री ने फिर भी 2021 के ग्रीष्मकालीन शिविर का इंतजार किया ताकि स्थापित परंपराओं का ही पालन किया जा सके। इस बार भी शिविर नहीं होने के कारण चुनाव नहीं हो पाये। आखिर 4 जुलाई को आलोक आश्रम में ही आयोजित केन्द्रीय बैठक के बाद माननीय संघप्रमुख श्री ने 9 जनवरी के प्रस्ताव के तहत प्रदत्त अधिकारों का उपयोग करते हुए **संघ के संचालन प्रमुख माननीय लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास को श्री क्षत्रिय युवक संघ का संघ प्रमुख मनोनीत कर दिया एवं स्वयं ने संरक्षक व मार्गदर्शक की भूमिका अंगीकार की।** आपने ऐसा करते हुए कहा कि मैं आप सबके सहयोग के लिए सदैव उपलब्ध रहुंगा, जैसा अब तक सहयोगी रहा हूं, बना रहुंगा लेकिन शरीर की अपनी सीमाएं हैं और उन सीमाओं के कारण मैं अब पूर्व की भांति यात्रा आदि भौतिक गतिविधियां नहीं कर पाता इसलिए औपचारिक रूप से अब संघ के संघप्रमुख श्री लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास होंगे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष पूनिया पहुंचे 'संघशक्ति'

श्री क्षत्रिय युवक संघ के माननीय संरक्षक भगवानसिंह रोलसाहबसर 12 जुलाई को जयपुर प्रवास पर रहे। उनके प्रवास की जानकारी मिलने पर भारतीय जनता पार्टी के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष सतीश पुनिया 12 जुलाई को श्री प्रताप फाउंडेशन के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' पहुंचे और माननीय साहब श्री से शिष्टाचार भेंट की। इस भेंट के दौरान श्री प्रताप फाउंडेशन के माननीय संयोजक महावीर सिंह जी सरवड़ी भी उपस्थित रहे। श्री पुनिया ने इस दौरान विभिन्न राजनीतिक व सामाजिक विषयों पर चर्चा की।

'कर्मक्षेत्र में धूम मचाओ, सात्विक शक्ति का प्रसार करो'

संभागीय बैठकों में बनी कार्ययोजनाएं

बाड़मेर

इस संसार में कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखने वालों तथा सात्विक शक्ति का प्रसार करने वालों का संघ आह्वान करता है। ऐसे ही कर्मयोगियों की कर्मस्थली है संघ। यह मार्ग कर्मशील लोगों के चलने का मार्ग है। उनका क्रीड़ा प्रांगण है और जो एक बार इस प्रांगण की मस्ती को चख लेता है वह फिर संसार में अन्यत्र कहीं गुम नहीं हो सकता। यह हमारी मनुष्यता को सार्थक करने का मार्ग है इसलिए हम जिस मनुष्य जीवन में आए हैं उसे हमें व्यर्थ की आपाधापी में ही नहीं खोना चाहिए। जिसकी रगों में उमंग व सात्विक परिवर्तन की त्वराएं दौड़ती हों, वह कभी निठल्ला नहीं रह सकता और ऐसे कर्मवीर लोगों से संसार आशाएं लेकर चलता है। संघ ऐसे ही कर्मशील लोगों के चलने का मार्ग है। हमें इस मार्ग पर चलकर संसार की ये आशाएं पूर्ण करने के लिए स्वयं को तैयार करना है और उन्हें पूर्ण करने हेतु स्वयं को प्रस्तुत करना है। बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में 10 जुलाई की शाम आयोजित संभागीय बैठक में आये बाड़मेर संभाग के स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह रोलसाहबसर ने उपरोक्त मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने कहा कि सत्र 2021-22 के लिए आप सबकी नई ऊजार्वान टीम बनी है, पूरी टीम को पूरे वर्ष सक्रिय रहना है, हर स्वयंसेवक को अपने लिए कुछ न कुछ काम तय करना है, कुछ लक्ष्य लेना है और कार्यक्षेत्र में धूम मचानी है, संघ की सात्विक शक्ति का प्रसार करना है। बैठक में बाड़मेर संभाग प्रमुख महिपाल सिंह चूली ने संगठनात्मक स्वरूप में किए गए बदलाव का विवरण देते हुए बताया कि संघ ने अपना कार्य विस्तार करते हुए अलग-अलग क्षेत्रों में अपने सहयोगियों को नवीन जिम्मेदारियां सौंपी हैं। हीरक जयंती वर्ष के तहत संघ का प्रत्येक कार्यकर्ता कुछ ना कुछ जिम्मेदारी लेकर कार्यक्षेत्र में लोगों तक संघ का संदेश पहुंचाएगा।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'कर्मक्षेत्र में धूम मचाओ, सात्विक शक्ति का प्रसार करो'

सिसरवादा

बीकानेर

जैसलमेर

जयपुर

(पृष्ठ 3 से लगातार)

संघ के विचार को जन जन तक पहुंचाने के लिए हमें सक्रिय रूप से कार्य करना हैं। सभी को एक दूसरे से समन्वयात्मक रूप से संघ द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारी का निर्वहन करना है। जिस कार्यकर्ता ने कोई कार्य की जिम्मेदारी नहीं ली है वह अपने संभाग प्रमुख से अपनी स्वेच्छा से कोई न कोई जिम्मेदारी लेगा। बैठक में सभी प्रांतों व मंडलों के कार्यक्षेत्र की जानकारी दी गई। प्रांतप्रमुखों, संभागीय सहयोगियों व मंडल प्रमुखों सहित अन्य सहयोगियों के दायित्वों की जानकारी दी गई। सभी दायित्वाधीन सहयोगियों के कार्य की नियमित समीक्षा का कार्यक्रम तय किया गया। संघशक्ति पथप्रेरक के ग्राहक सदस्य बनाने के व्यक्तिगत लक्ष्य लिए गये। मैदानी शाखाओं को शुरू करने को लेकर चर्चा की गई। महामारी के संबंध में सरकारी दिशानिदेर्शों के अनुसार कम संख्या के शिविर आयोजित करने को लेकर चर्चा की गई। इस बैठक में केन्द्रीय कार्यकारी कृष्ण सिंह राणीगांव, वरिष्ठ स्वयंसेवक देवीसिंह माडपुरा, नरपतसिंह चिराणा, रामसिंह माडपुरा, वीरसिंह शिवकर, प्रकाश सिंह भुरटिया सहित शिव,गडरा रोड़, गुड़ामालानी , चौहटन तथा बाड़मेर शहर प्रांत के 120 स्वयं सेवकों ने भाग लिया।

जयपुर संभाग व पूर्वी राजस्थान संभाग की बैठक जयपुर स्थित केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में संपन्न हुआ। बैठक को संबोधित करते हुए संघप्रमुख श्री लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने कहा कि संघ का कार्य अदृश्य शक्तियों के द्वारा संपादित हो रहा है। पूज्य तनसिंह जी, पूज्य नारायण सिंह जी आदि महापुरुषों की तपस्या ही श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में फलीभूत हो रही है। हम तो केवल निमित्त मात्र हैं, इसलिए किसी भी दायित्व के बारे में यह ना सोचें कि यह मैं कर रहा हूं बल्कि यह सोचें कि यह स्वतः होने वाली प्रक्रिया है, ईश्वरीय कार्य है और मेरा सौभाग्य है कि ईश्वर ने मुझे माध्यम बनाया है। इस प्रण के साथ हमें दायित्व के निर्वहन में प्रवृत होना है, शेष सब स्वतः संपादित होता जाएगा। बैठक का संचालन करते हुए जयपुर संभाग के संभाग प्रमुख व पूर्वी राजस्थान संभाग के संभाग प्रमुख मदनसिंह बामण्या ने अपने अपने संभाग के दायित्वाधीन स्वयंसेवकों की जानकारी दी। केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ ने अलग अलग दायित्वों के कार्यों की जानकारी दी। बैठक में पूज्य तनसिंह जी द्वारा लिखित पुस्तक 'भिखारी की आत्मकथा' के प्रकरण 'तुम सहयोगी हो' का पठन किया गया एवं इसके माध्यम से समझने का प्रयत्न किया गया कि सहयोगी को कैसा होना चाहिए।

जैसलमेर संभाग की बैठक सम्भागीय कार्यालय तनाश्रम में शनिवार को सांय 6 बजे आयोजित की गई जिसमें पोकरण, नाचना रामदेवरा, म्याजलार, झिनझिनयाली, मोहनगढ़, रामगढ़, जैसलमेर शहर प्रांत के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। इस सत्र में आयोजित होने वाले शिविरों, शाखाओं एवं संघ की गतिविधियों को विस्तार देने के लिए अलग-अलग स्वयंसेवकों को दायित्व दिए गए। प्रांत प्रमुखों के द्वारा यह प्रयास किया गया कि प्रत्येक स्वयंसेवक अपनी रूचि के अनुसार कोई काम लें। मंडल प्रमुख, प्रांतीय सहयोगी आदि दायित्व सौंपे गए। संभाग प्रमुख तारेंन्द्र सिंह झिंझनियाली ने कहा कि संघ के केंद्रीय निर्देशानुसार कुछ बदलाव किए गए हैं जिसमें माननीय श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर के मार्गदर्शन में वर्तमान संघ के संघ प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह जी बेण्यांकावास को जिम्मेदारी दी गई है, उन्हीं के निर्देशन में दिए गए नए दायित्व केंद्रीय कार्यकारी, विभाग प्रमुख एवं अन्य सहयोगीयों सहित संभाग के संभाग प्रमुख एवं प्रांत प्रमुख बनाये गये हैं। वर्तमान में परिस्थिति अनुकूल लगते ही मैदानी शाखाओं पर जोर देने के साथ अनुकूल परिस्थिति होने पर शिविर आयोजित करने को लेकर चर्चा की गई। उसके पश्चात प्रांत प्रमुखों ने अलग अलग जगह बैठकर अपने प्रांत की कार्ययोजना बनाई।

जोधपुर संभाग की संभागीय बैठक शनिवार शाम को संभागीय कार्यालय 'तनायन' जोधपुर में सम्पन्न हुई। बैठक का संचालन करते हुए संभाग प्रमुख चंद्रवीर सिंह जी देणोक ने संघ के नए संगठनात्मक स्वरुप के बारे में विस्तार से जानकारी दी तथा संघ के संभागीय सहयोगियों का कार्य विभाजन की जानकारी दी। बैठक एजेंडा अनुरूप सभी बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई एवं तद्नुसार कार्ययोजना बनाई गई। बैठक में केंद्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह जी रणधा, गंगा सिंह जी साजियाली, रेवंतसिंह पाटोदा, शिविर शिक्षण विभाग प्रभारी चेन सिंह जी बैठवास सहित संभाग के 45 स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

बीकानेर संभाग की संभागीय बैठक बीकानेर स्थित संभागीय कार्यालय 'नारायण निकेतन' में संपन्न हुई। बैठक में अन्य संभागों की तरह ही एजेंडा के सभी बिंदुओं पर चर्चा कर सत्रपर्यंत किए जाने वाले कार्यों की योजना बनाई गई। बैठक में वरिष्ठ स्वयंसेवक ईश्वरसिंह चनाणा, उम्मेद सिंह सुल्ताना, मातुसिंह मानपुरा, राजेंद्र सिंह आलसर, गुलाबसिंह आशापुरा सहित संभाग के अन्य स्वयंसेवक शामिल हुए।

सौराष्ट्र कच्छ संभाग की संभागीय बैठक 11 जुलाई रविवार को गुजरात प्रदेश के संघ कार्यालय 'शक्तिधाम' सुरेंद्रनगर में प्रातः 10 बथे से अपराह्न 1 बजे तक वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा के सानिध्य में रखी गई। बैठक में सभी संभागों की तरह ही पूर्व निर्धारित एजेंडानुसार संगठनात्मक स्वरूप की जानकारी देकर दायित्वों की चर्चा की गई एवं तद्नुसार कार्ययोजना बनाई गई। जालोर संभाग की संभागीय बैठक पाली प्रान्त के सिसरवादा गांव में सम्पन्न हुआ। जिसमें जालोर, भीनमाल, सांचौर, पाली, सिरोही प्रान्तों से दायित्वाधीन स्वयंसेवक शामिल हुए। इस वर्ष संगठनात्मक स्वरूप में जो परिवर्तन किए गए उसके बारे में सभी को जानकारी दी गई। हीरक जयंती वर्ष के तहत संभाग के सभी प्रान्तों में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का दायित्व सौंपा गया एवं विगत 6 महीने में संभाग में जो संघ कार्य हुआ उसकी समीक्षा की गई। संभाग प्रमुख अर्जुनसिंह देलदरी ने सभी स्वयंसेवको को संघ कार्य मे गति लाने की बात कही। उन्होंने कहा कि हम निष्क्रिय नहीं रहें, हमारी सक्रियता ही हमे जीवित रखेगी इसलिए अपने आप को सक्रिय बनाये रखें। दूसरे दिन सुबह संघ के संरक्षक व मार्गदर्शक माननीय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर का सभी स्वयंसेवको को सानिध्य प्राप्त हुआ। साहब श्री ने कहा कि सभी स्वयंसेवक दिए गए दायित्व का समय पर निर्वहन करें एवं संकल्प लेकर संघ को मजबूती प्रदान करने में सहयोग करें। उन्होंने सभी दायित्वाधीन स्वयंसेवको से दिये गये दायित्व के बारे में विस्तार से जानकारी ली। नागौर संभाग की संभागीय बैठक भी रविवार को साधना संगम संस्थान द्वारा संचालित संभागीय कार्यालय 'आयुवान निकेतन' में रखी गई। संभाग प्रमुख शिंभूसिंह आसरवा ने संगठनात्मक स्वरूप के नये बदलावों की जानकारी दी। मैदानी शाखाओं और शिविरों की संभावनाओं पर चर्चा की गई। दायित्वों की जानकारी दी गई एवं सत्रपर्यंत संघ कार्य की कार्ययोजना बनाई गई। बैठक में वरिष्ठ स्वयंसेवक छोटूसिंह जाखली, भगवत सिंह सिंघाणा सहित नागौर, शेखावाटी, कुचामन व लाडनूं प्रांतों के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। बालोतरा संभाग की संभागीय बैठक 11 जुलाई को ही बालोतरा स्थित वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में रखी गई। केन्द्रीय व संभागीय संगठनात्मक स्वरूप की जानकारी देने के बाद प्रांतीय सहयोगी व मंडल प्रमुख तय किए गये एवं उनके उत्तरदायित्वों की जानकारी दी गई। सत्रपर्यंत संघकार्य की कार्ययोजना बनाई गई।

मध्य गुजरात संभाग की संभागीय बैठक काणेटी की प्राथमिक शाला में संपन्न हुई जिसमें अहमदाबाद ग्रामीण, शहर व गांधीनगर प्रांत के स्वयंसेवक शामिल हुए। सूरत प्रांत की बैठक अलग से प्रस्तावित है। संभाग प्रमुख दीवान सिंह काणेटी ने बैठक में अन्य संभागीय बैठकों की तरह ही केन्द्र से भेजे गये बैठक एजेंडे पर चर्चा कर दायित्व दिए। महाराष्ट्र संभाग की बैठक वर्चुअल माध्यम से रखी गई जिसमें मुंबई, पुणे, बैंगलुरू प्रांतों के स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया। संभाग प्रमुख नीरसिंह सिंघाणा ने संगठनात्मक स्वरूप व अन्य विषयों पर केन्द्र के निदेर्शानुसार जानकारी दी एवं सत्र पर्यंत होने वाले संघ कार्यों का दायित्व दिया। इसी प्रकार गोहिलवाड़ संभाग की संभागीय बैठक मोरचंद के निकट खोडियार मंदिर में रखी गई जिसमें 55 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। बैठक में केन्द्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची व संभाग प्रमुख धर्मेंद्र सिंह आमली ने केन्द्रीय बैठक में हुए निर्णयों से अवगत करवाया एवं सत्रपर्यंत संघ कार्य की कार्ययोजना बनाई।

संगठनात्मक स्वरूप सत्र 2021-22

श्री क्षत्रिय युवक संघ के सत्र 2021-22 के लिए संगठनात्मक स्वरूप निम्नानुसार रहेगा।

मार्गदर्शन एवं संरक्षण : माननीय भगवान सिंह रोलसाहबसर
संघप्रमुख : माननीय लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास
समन्वयक : माननीय महावीरसिंह सरवड़ी

केन्द्रीय कार्यकारी

नाम	कार्य	नाम	कार्य
श्री गजेन्द्रसिंह आऊ	शिविर व शिविर शिक्षण	श्री महेन्द्रसिंह पांची	गुजरात प्रदेश
श्री प्रेमसिंह रणधा	शाखा व शाखा शिक्षण	श्री कृष्णसिंह राणीगांव	विस्तार व इतिहास (लेखन व संरक्षण)
श्री गंगासिह साजियाली	लेखा, संस्थान व संयोमा	श्री रेवंतसिंह पाटोदा	प्रकाशन, प्रचार-प्रसार, रिकॉर्ड व आनुषंगिक संगठन

केन्द्रीय विभाग

विभाग	नाम	विभाग	नाम
1. शिविर लेखा	श्री दीपसिंह बैण्यांकाबास	8. विज्ञापन विभाग (संघशक्ति)	श्री जितेन्द्रसिंह देवली
2. शाखा लेखा	श्री महेन्द्रसिंह गुजरावास (राजस्थान व अन्य) श्री छन्नुभा पच्छेगांम (गुजरात)	9. समन्वय विभाग	श्री देवीसिंह माडपुरा (राजस्थान) श्री रामसिंह माडपुरा (गुजरात)
3. संघशक्ति पथप्रेरक ग्राहक लेखा	श्री गणपतसिंह अवाय	10. शिविर शिक्षण विभाग	श्री प्रवीणसिंह धोलेरा श्री गुलाबसिंह आशापुरा श्री चैनसिंह बैठवास
4. इतिहास (लेखन व संरक्षण)	श्री खींवसिंह सुल्ताना		
5. महिला विभाग	श्री दीपसिंह बैण्यांकाबास (राजस्थान) श्री जोरावरसिंह भादला (राजस्थान) श्री अजीतसिंह धोलेरा (गुजरात)	11. विस्तार विभाग	श्री गोपालसिंह रणधा श्री हरिसिंह बेरसियाला श्री प्रकाश सिंह भुरटिया श्री नन्दसिंह बेड़ श्री श्यामसिंह चिरनोटिया श्री उदयसिंह देदुसर श्री महावीर सिंह हरदासकाबास श्री चंदनसिंह चांदेसरा
6. वेबसाईट व सोशल मीडिया	श्री अभयसिंह रोडला श्री हर्षवर्धनसिंह रेड़ा		
7. रिकॉर्ड विभाग ओडियो, वीडियो व फोटो लिखित सामग्री	 श्री बृजराजसिंह खारड़ा श्री जितेन्द्रसिंह देवली श्री श्यामसिंह चिरनोटिया		

संभाग प्रमुख व प्रांत प्रमुख

1. संभाग- जयपुर

संभाग प्रमुख	श्री राजेन्द्रसिंह बोबासर
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. जयपुर शहर	श्री सुधीरसिंह ठाकरियावास
2. जयपुर ग्रामीण (द.प.)	श्री देवेन्द्रसिंह बड़वाली
3. जयपुर ग्रामीण (उ.पू.)	श्री रामसिंह अकदड़ा
5. बुदेलखंड	श्री जितेन्द्रसिंह सिसरवादा

2. संभाग- पूर्वी राजस्थान

संभाग प्रमुख	श्री मदन सिंह बामण्या
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. दौसा	श्री महेंद्र सिंह चावण्डेडा
2. अलवर	श्री मनोजसिंह पीपली
3. दिल्ली (NCR)	श्री रेवतसिंह धीरा

3. संभाग- नागौर

संभाग प्रमुख	श्री शिम्भुसिंह आसरवा
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. नागौर	श्री उगमसिंह गोकुल
2. कुचामन	श्री नत्थूसिंह छापड़ा
3. लाडनूं	श्री विक्रमसिंह ढींगसरी
4. शेखावाटी	श्री जुगराजसिंह जुलियासर

4. संभाग- बीकानेर

संभाग प्रमुख	श्री रेवन्तसिंह जाखासर
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. बीकानेर (शहर)	श्री खींवसिंह सुल्ताना
2. नोखा कोलायत	श्री करणीसिंह भेलु
3. श्री डूंगरगढ़	श्री भागीरथ सिंह सेरूणा
4. बीकानेर (उत्तर)	श्री शक्तिसिंह आशापुरा
5. चुरू हनुमानगढ़	श्री राजेन्द्र सिंह आलसर

5. संभाग- बाड़मेर

संभाग प्रमुख	श्री महिपालसिंह चूली
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. बाड़मेर	श्री छगनसिंह लूणू
2. शिव	श्री धूड़सिंह कोटड़ा
3. गड़रारोड़	श्री समदरसिंह हरसाणी
4. चौहटन	श्री लालसिंह आकोड़ा
5. गुड़ामालानी	श्री गणपतसिंह बूठ

6. संभाग बालोतरा

संभाग प्रमुख	श्री मूलसिंह काठाड़ी
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. बालोतरा	श्री राणसिंह टापरा
2. सिवाना	श्री भैरूसिंह पादरू
3. बायतु	श्री मूलसिंह चान्देसरा

7. संभाग- जैसलमेर

संभाग प्रमुख	श्री तारेन्द्रसिंह झिंझणियाली
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. जैसलमेर	श्री नरेन्द्रसिंह तेजमालता
2. चांधन	श्री रतनसिंह बडोड़ागांव
3. म्याजलार	श्री बाबूसिंह बैरसियाला
4. झिंझणियाली	श्री भोजराज सिंह तेजमालता
5. रामगढ़	श्री पदमसिंह रामगढ़
6. पोकरण	श्री नरपतसिंह राजगढ़
7. रामदेवरा नाचना	श्री अमरसिंह रामदेवरा
8. मोहनगढ़	श्री हाकमसिंह देवड़ा

8. संभाग- जोधपुर

संभाग प्रमुख	श्री चन्द्रवीरसिंह देणोक
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. जोधपुर	श्री भरतपाल सिंह दासपां
2. शेरगढ़	श्री भैरूसिंह बेलवा
3. भोपालगढ़ बिलाड़ा	श्री चैनसिंह साथीन
4. फलोदी ओसियां	श्री भवानीसिंह पीलवा

9. संभाग- जालोर

संभाग प्रमुख	श्री अर्जुनसिंह देलदरी
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. पाली	श्री मोहब्बतसिंह धींगाणा
2. जालोर	श्री खुमाण सिंह दूदिया
3. भीनमाल	श्री नाहरसिंह जाखड़ी
4. सांचौर	श्री महेन्द्रसिंह कारोला
5. सिरोही	श्री ईश्वरसिंह सरणकाखेड़ा

10. संभाग- मेवाड़ वागड़

संभाग प्रमुख	श्री भंवरसिंह बेमला
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. उदयपुर	श्री सवाई सिंह बिजेरी (प्रथम)
2. राजसमंद	श्री फतेह सिंह भटवाड़ा
3 बांसवाडा	श्री हनवंतसिंह सज्जनसिंह का गड़ा
4. डूंगरपुर	श्री टैंकबहादूरसिंह गेंहुवाड़ा
5. प्रतापगढ	श्री दिग्विजय सिंह लांबापारडा

(शेष पृष्ठ 6 पर)

संपादकीय

जातिवाद और हम

विगत दिनों केन्द्रीय मंत्रीपरिषद में हुए फेरबदल के बाद राजस्थान विधानसभा के एक विधायक एवं विधानसभा में सत्तारूढ़ पार्टी के विधायक दल के महत्वपूर्ण पदाधिकारी का बयान एक चैनल के ट्विटर हैंडल के माध्यम से प्रसारित हुआ जिसमें कहा कि गया कि केन्द्रीय मंत्रीपरिषद में हुए फेरबदल में उनके समाज को उचित प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया। होने को यह सामान्य बयान है जो प्रायः विरोधी पार्टी के लोग देते रहते हैं। लेकिन थोड़ा गंभीरता से सोचें तो यह एक घातक प्रवृत्ति का सूचक है। किसी समाज को कितना प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए, कम मिला या ज्यादा मिला यह सब बात करने के लिए हर समाज में सामाजिक संस्थाएं बनी हुई हैं और उन्हें ही यह बात करनी चाहिए। भारत में वर्तमान शासन व्यवस्था में दबाव समूह का अपना महत्व है और जाति हमारे यहाँ स्वाभाविक दबाव समूह है इसलिए यदि किसी समाज का कोई सामाजिक संगठन इस प्रकार की बात करता है तो यह उसका दायित्व माना जा सकता है लेकिन कोई विधायक तो किसी जाति विशेष का नहीं होता। उक्त विधायक महोदय ने चुनावों के समय में अपने विधानसभा क्षेत्र में यह कह कर तो वोट नहीं मांगे थे कि मैं अमुक जाति का प्रतिनिधि हूं इसलिए अमुक जाति वाले ही मुझे वोट देवें? क्या उनके राजनीतिक दल ने विधानसभा में उनको जो दायित्व दिया है वह इसलिए दिया है कि वे सार्वजनिक जीवन में किसी जाति विशेष का प्रतिनिधित्व करेंगे? व्यवहार में देखें तो आज की राजनीति में जाति निर्णायक कारक है इसलिए इसमें से जाति को बाहर नहीं किया जा सकता। जाति को देखकर टिकट मिलती है, जाति को देखकर पद दिए जाते हैं, जातियों के कोटे निर्धारित होते हैं लेकिन फिर भी एक अघोषित मर्यादा बनी हुई है कि सार्वजनिक जीवन में राजनेता अपने आपको सभी वर्गों का प्रतिनिधि बताते हैं और कमोबेश वे इस मर्यादा को आचरित भी करते हैं। ऐसे में यदि किसी जिम्मेदार राजनेता द्वारा बिना किसी शर्म के अपने आपको जाति के प्रतिनिधि के रूप में पेश किया जाता है तो यह प्रवृत्ति घातक है और शनैः शनैः यह प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है जिससे राजनीतिक कारणों से वर्षों से साथ रह रही जातियों के बीच का सौहार्द बलि चढ़ता जा रहा है। आज के राजनेताओं में अनेक ऐसे हो गये हैं जो सार्वजनिक रूप से इस प्रकार के जातिवादी बयान देकर इस आग में घी का काम करते हैं और स्वयं के साथ साथ पूरे समाज का स्तर गिराते हैं। इसी गिरते हुए स्तर का परिणाम है कि हमारे समाज के लोग भी हमारे राजनेताओं से ऐसे ही घोर जातिवादी बयानों की अपेक्षा करते हैं और ऐसा न करने पर उनकी सार्वजनिक आलोचना करते हैं। यहां एक प्रश्न हमारे सामने खड़ा होना चाहिए कि जब किसी दूसरे समाज का कोई राजनेता घोर जातिवादी राजनीति करता है तो क्या हमें अच्छा लगता है? क्या उसका पक्षपातपूर्ण व्यवहार हमारी नजर में उसकी इज्जत बढ़ाता है? जहाँ तक मैं समझता हूं, इन प्रश्नों के लिए हमारा उत्तर ना में ही आएगा। हम ऐसे लोगों को पसंद नहीं करेंगे। तब फिर हमें यह भी विचार करना चाहिए कि दूसरी जातियों के राजनेताओं द्वारा किए जाने वाले ऐसे व्यवहार को जब हम पसंद नहीं करते तो हमारे लोगों से वैसा ही व्यवहार क्यों करवाना चाहते हैं? हम क्यों चाहते हैं कि जब हम दूसरी जातियों के बड़बोले जातिवादी नेताओं को पसंद नहीं करते तो हमारे राजनेता भी ऐसे बड़बोले जातिवादी बयान देवें और दूसरी जातियों के लोगों में हिराकत के पात्र बनें? हमारी इस चाह का कारण ढूंढने जायेंगे तब यही पायेंगे कि हम मानते हैं कि उनके लोग ऐसा करते हैं तो हमारे लोग ऐसा क्यों नहीं करते। हमें उनका करना अच्छा नहीं लगता लेकिन फिर भी चाहते हैं कि हमारे लोग भी ऐसा करें। ऐसी ही सोच जातिवाद पैदा करती है और आज पूरा संसार ऐसे ही वादों का शिकार है। कहीं संप्रदायवाद है तो कहीं भाषावाद है। कहीं क्षेत्रवाद है तो कहीं जातिवाद है। कहीं भाई भतीजावाद है तो कहीं परिवारवाद है। कहीं राष्ट्रवाद है तो कहीं नस्लवाद है और आश्चर्य की बात यह है कि हर वाद का शिकार आदमी उसका जबाब भी वाद से ही देना चाहता है। लोग समस्या से समस्या को मिटाना चाहते हैं, आग से आग को बुझाना चाहते हैं और हम भी जमाने के साथ चलने के नाम पर इस आग में कूदने को उतारु हैं और इसे ही बुद्धिमानी कह कर स्वयं ही स्वयं को समझदार होने का प्रमाणपत्र देते रहते हैं। लेकिन हमारे लिए विचारणीय है कि क्या यह बुद्धिमानी है? यदि यह बुद्धिमानी ही है तो जब रावण ने सीता का अपहरण किया तो राम ने मंदोदरी का अपहरण करने की बुद्धिमानी क्यों नहीं दिखाई? यदि यही बुद्धिमानी है तो फिर जब दुर्योधन ने द्रोपदी का चीर हरण करवाया तो भगवान कृष्ण ने पांडवों से कौरवों की महिलाओं का चीरहरण क्यों नहीं करवाया? मुगल दुश्मनों की महिलाओं को कैद कर उनके साथ दुर्व्यवहार करते थे तो महाराणा प्रताप ने मुगल सेनापति की महिलाओं को ससम्मान वापिस छोड़ने के लिए अपने युवराज को क्यों भेजा? जब मुगल दुश्मन की संतानों को कैद कर उनका जबरदस्ती धर्मांतरण करवाते थे तो दुगार्दास जी ने औरंगजेब के पोते पोतियों को संरक्षण देकर उन्हें इस्लाम की शिक्षा क्यों दिलवाई? जैसे को तैसे की पैरवी करने वाले बुद्धिवादी लोग गैरजिम्मेदाराना बात करते हुए इनकी समझदारी पर प्रश्न उठा सकते हैं लेकिन हम तो गैर जिम्मेदार नहीं हैं। हमारे पूर्वजों ने इस समाज की बहती धारा में हाथ धोने का आदर्श स्थापित नहीं किया बल्कि धारा के विपरीत चलकर संसार को उत्कर्ष का मार्ग बताया और क्या हमारे लिए यह दुर्भाग्यपूर्ण नहीं है कि हम संसार के नाले में बहने को उतारु ही नहीं हैं बल्कि इसमें बहने को तैयार नहीं होने वालों को दकियानूसी, आदर्शवादी, पुरातनपंथी आदि अनेक उपाधियां देकर हतोत्साहित करने को तत्पर हैं? आज ऐसा ही हो रहा है, हमारे तथाकथित समझदार लोग हमारे राजनेताओं को इसलिए दोष देते हैं कि वे सार्वजनिक रूप से जातिवादी बयान नहीं देते। हमारे अधिकारियों से इसलिए शिकायत रखते हैं कि वे जातिवाद को पोषित नहीं करते, हमारे सामाजिक संगठनों को इसलिए कोसते हैं कि वे अन्य जातियों के सामाजिक संगठनों की तरह घृणित जातिवाद नहीं करते। ऐसे में उनकी समझदारी पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है क्योंकि गिरना समझदारी नहीं है, उसके लिए किसी पुरुषार्थ की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि व्यक्ति ढ़लान की ओर स्वतः ही प्रवाहमान हो जाता है। पुरुषार्थ तो धारा के विपरीत चलकर उस धारा को ही ऊंचाई की ओर मोड़ना होता है और जो ऐसा कर पाते हैं वे ही संसार का सही रूप में नेतृत्व करते हैं। हमारे पूर्वजों ने ऐसा किया इसीलिए वे संसार के अग्रगामी बन पाये और आज संसार उनको केवल याद मात्र ही नहीं करता बल्कि उनके साथ येन केन प्रकारेण अपना संबंध जोड़कर उनका दिखना चाहता है या उनको ही हमसे छीनकर अपना दिखाना चाहता है। हम भी इस संघर्ष से बड़े चिंतित हैं और उनको हमारे से छीनने के प्रयासों को लेकर क्षुब्ध हैं और हमें ऐसा होना भी चाहिए लेकिन साथ ही साथ उनसे प्रेरणा लेकर अधोगति की ओर जाने वाले नाले से बचकर अपने आचरण का आदर्श प्रस्तुत कर उस नाले के प्रवाह को मोड़कर उपयुक्त दिशा प्रदान करनी चाहिए। जातिवाद एक ऐसा ही नाला है जिसने सभी को अपने आगोश में लिया है, हम उसके आगोश में जाने से बचें और अपना उदाहरण पेश कर अन्यों को भी बचने की प्रेरणा देवें, इसी से हमारा क्षत्रियत्व पुष्ट होना संभव है।

केन्द्रीय शाखा में संघ साहित्य की मार्गदर्शक विवेचना

साप्ताहिक अर्थबोध शाखा में 01 जुलाई को पूज्य तनसिंह जी रचित 'फूल खिला हूं तेरे चमन में' सहगीत पर चर्चा करते हुए माननीय अजीत सिंह जी धोलेरा ने बताया कि इस गीत में श्री क्षत्रिय युवक संघ का एक निष्ठावान स्वयंसेवक अपने गुरु पूज्य तनसिंह जी के प्रति अपना पूर्ण समर्पण का भाव व्यक्त करते हुए कहता है कि आप के उद्देश्य की पूर्ति के लिए मेरा आप जैसे चाहे वैसा उपयोग करें। नया साधक साधना के प्रति स्वभावतः लापरवाह होता है क्योंकि वह नहीं जानता है कि उसका हित किसमें है लेकिन गुरु सदैव जानता है कि साधक का हित किसमें है। इसीलिए संघ का यह स्वयंसेवक अपनी डोर संघ के हाथों में सौंप देता है। गीत में साधक अपनी विशेषताएं बताते हुए कहता है कि कर्म, ज्ञान और भक्ति के सौरभ को लेकर एक पुष्प की भांति मैं इस संघ रूपी बगीचे में खिला हूं। मेरी आकांक्षाए, मेरे अरमान, मेरा समर्पण, मेरी श्रद्धा, मेरे हृदय के सभी भाव केवल संघ रूपी इस बगीचे में सौरभ और सुगंध फैलाने के लिए हैं। वह गुरु रूपी माली से आह्वान करता है कि उसे डाली से तोड़कर उसके आराध्य अर्थात समाज के चरणों में समर्पित कर दिया जाए। साधक बलिदान की शाश्वत परंपरा का वाहक बनने में अपना सौभाग्य समझता है, समाज को प्रकाशित करने के लिए वह अपने जीवन को दीपकवत जलाने के लिए तत्पर होता है। वह अपनी समस्त क्षमताओं, योग्यताओं और प्रतिभा को संघ और समाज की धरोहर ही मानता है और उन्हें संघ को अर्पण करके स्वयं कृतज्ञता अनुभव करता है। ऐसे ही साधक समाज में नवजीवन जागृत करने के सूत्रधार बनते हैं। हमें भी यह विचार करना चाहिए कि क्या हम भी ऐसे आदर्श स्वयंसेवक बन सकते हैं अथवा नहीं? यदि नहीं बन सकते हैं तो किस कारण से और उन कारणों को दूर करने में हमारा क्या प्रयास हैं? सच्चा साधक तो केवल कौम का ऋण उतारने को ही अपना कर्तव्य मानता है। वह अपनी अनुभवहीनता अथवा अल्पवयता को बहाना नहीं बनाता और अपनी यत्किंचित क्षमताओं को भी अपने ध्येय को समर्पित कर देता है। हम भी ऐसे ही स्वयंसेवक बनकर पूज्य तनसिंह जी और संघ के स्वप्न को मूर्तिमान कर सकें, ऐसी हमारी प्रार्थना होनी चाहिए। सांघिक क्रांति के हम अग्रदूत बनें, सामाजिक नवचेतना के आदर्श संवाहक बनकर हम अपने जीवन को सफल बनाएं - ऐसे निश्चय के साथ हमें संघ साधना में जुट जाना चाहिए। हमारी इन उमंगों के साक्षी यह धरती और आकाश रहेंगे अर्थात प्रकृति स्वयं हमारे कर्तव्य पालन में सहायक बनेगी और ईश्वर कृपा से हम सफल मनोरथ होंगे, क्योंकि यह कार्य केवल हमारी ही नहीं बल्कि समय की भी मांग और आवश्यकता है। इसी प्रकार 8 जुलाई को 'फूल खिलेंगे धीरज धरिये' सहगीत पर चर्चा करते हुए अजीत सिंह जी ने बताया कि कोई गीत तब बनता है जब गीतकार संवेदनशील हो। बिना संवेदना के गीत बन नहीं सकते और यदि बनते भी हैं तो उनमें कोई सार नहीं होता। पूज्य तन सिंह जी अत्यंत संवेदनशील, तत्वज्ञ और आत्मज्ञानी महापुरुष थे। उनके द्वारा रचित काव्य अत्यंत विस्तृत और गहन है। ऐसा ही यह गीत भी है जिसमें तन सिंह जी ने हमें धीरज धारण करने के लिए कहा है और आश्वासन दिया है कि फूल अवश्य खिलेंगे अर्थात सफलता अवश्य मिलेगी। किंतु जिस प्रकार एक बीज को अंकुरित होने में, पल्लवित और पुष्पित होने में और फलित होने में समय लगता है, श्रम लगता है, संघर्षों का सामना करना पड़ता है उसी प्रकार हमें भी अपने ध्येय को प्राप्त करने के लिए तपस्या, साधना और धीरज का मार्ग अपनाना होगा। समाज जागरण के लिए हमारा दृढ़ निश्चय ही वह बीज है जो कर्मठता की धरती में बोया जाता है। इसके पश्चात भी जिस प्रकार बीज को जल की आवश्यकता होती है उसी प्रकार संकल्प और कर्मठता के साथ साधना में श्रद्धा की भी आवश्यकता होती है। बीज को तोड़ने के लिए जिस ताप की आवश्यकता होती है वह ताप साधक की तपस्या से ही उत्पन्न होता है। इसलिए साधक को त्याग और तपस्या से किसी भी प्रकार का भय नहीं रखना चाहिए। इस तपस्या से ही हमारे भीतर की विकृतियां नष्ट होती हैं। कर्तव्य पालन के मार्ग पर बढ़ते हुए जो संघर्ष आते हैं, जो बाधाएं आती हैं उनको भी प्रेम पूर्वक स्वीकार करना और उनसे विचलित हुए बिना निरंतर अपने ध्येय की ओर बढ़ते रहना ही सच्चे साधक की पहचान है। इसके लिए अनंत धीरज की आवश्यकता होती हैं और ऐसे धीरज से ही साधक काल पर भी विजय प्राप्त कर सकता है। भय, शोक, राग, द्वेष, मोह आदि से पार होकर ही साधक स्वयं में रस का ऐसा भंडार बनता है जो समाज की ज्ञानपिपासा को शांत कर सकता है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

केन्द्रीय शाखा में संघ साहित्य की मार्गदर्शक विवेचना

(पृष्ठ 5 से लगातार) किया हुआ कर्म कभी निष्फल नहीं होता इसलिए साधक भी कभी असफल नहीं हो सकता। सही समय आने पर उसे सफलता अवश्य मिलेगी लेकिन सच्चा साधक वही है जो इस सफलता को अपनी मानकर अहंकारग्रस्त नहीं होता और इस सफलता को भी अपने आराध्य के चरणों में समर्पित कर देता है।

27 जून को साप्ताहिक रविवारीय शाखा में पूज्य तनसिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 82 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति साधना के क्षेत्र में अयोग्य सिद्ध हो जाता है तो जीवन के क्षेत्र में उसके योग्य सिद्ध होने की संभावनाएं भी अत्यंत कम है। क्योंकि साधना अपने आप में जीवनव्यापी संघर्ष हैं और जो इस संघर्ष से जी चुराता है, इसके लिए आवश्यक कीमत को चुकाने का साहस नहीं रखता, वह जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सफलता के लिए आवश्यक कीमत नहीं चुका सकेगा। पूज्य तनसिंह जी ने इस अवतरण में ऐसे ही एक व्यक्ति का उदाहरण दिया है जो केवल अपनी सुविधा को देखता है और अपने व्यवहार के कारण अन्य को होने वाली असुविधा का विचार नहीं करता। जबकि दूसरों की असुविधा दूर करने के लिए स्वयं की सुविधाओं का त्याग करना ही सच्ची मानवता है। साधना तो इससे भी आगे की बात बताती है कि दूसरों की सुविधा के लिए यदि हमें अपना अधिकार भी छोड़ना पड़े तो साधक को प्रसन्नता पूर्वक उसे छोड़ देना चाहिए। समाज चरित्र की शिक्षा का प्रारंभ भी इसी बात से होता है कि हम स्वयं से अधिक दूसरों का ख्याल रखें। यह छोटी-छोटी बातें ही साधना का आधार बनती हैं। जो व्यक्ति अपने आसपास रहने वालों की सुविधा की चिंता नहीं करता, उनके हित की कामना नहीं करता, वह पूरे समाज के हित अथवा सुविधा के लिए कोई त्याग कैसे कर सकता है? ऐसा व्यक्ति समाज चरित्र की शिक्षा के लिए अनुपयुक्त पात्र है। संघ की सामूहिक साधना में भी हम इस शिक्षण का व्यवहारिक स्वरूप देख सकते हैं। शिविर में जो व्यवस्था निश्चित की जाती है उसका पालन करने के साथ-साथ प्रत्येक स्वयंसेवक को इस बात का भी ध्यान रखना होता है कि उसके कारण किसी अन्य को किसी भी प्रकार की कठिनाई अथवा असुविधा का सामना न करना पड़े। सामूहिकता का यह शिक्षण ही हमारे भीतर के सामाजिक भाव को जागृत करता है और समाज चरित्र को विकसित करता है। साधक को स्वयं पर दूसरों को वरीयता देने का यह सिद्धांत अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में लागू करना होता है तभी उसकी साधना उसके जीवन को निखार सकेगी। अवतरण की व्याख्या के पश्चात स्वयंसेवकों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का समाधान करते हुए महावीर सिंह जी ने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य एक अत्यंत महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है। यह उत्तरदायित्व हमारी शक्तियों के संपूर्ण नियोजन की मांग करता है। यदि हमारी शक्तियां अनेक स्थानों पर बिखरी रहेगी तो क्षत्रिय युवक संघ के द्वारा सौंपे गए दायित्व का पूर्ण निष्ठा से पालन हमारे लिए संभव नहीं होगा। इसलिए यह आवश्यक हैं कि हम ऐसी अन्य जिम्मेदारियां लेने से बचें जो संघ कार्य में हमारे लिए बाधा बन सकती हैं। हमारा व्यवहार इस प्रकार का होना चाहिए कि हमारे कारण कभी भी संघ पर अंगुली ना उठे। हम संघ के प्रतिनिधि के रूप में समाज में कार्य करते हैं और इसीलिए इस बात का हमें सदैव स्मरण होना चाहिए। इसी प्रकार 4 जुलाई को डायरी के अवतरण संख्या 223 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने कहा कि महापुरुष कभी भी सुख सुविधा अथवा यश प्राप्ति के लिए जीवन नहीं जीते। वे केवल अपने ध्येय के प्रति समर्पित होते हैं और अपनी कर्मठता और तपस्या से समाज को बरबस अपनी और खींच लेते हैं। लेकिन हम अर्थात समाज महापुरुषों के ध्येय को भूलकर उन्हें केवल यश और नाम ही प्रदान करते हैं। यह उन महापुरुषों के प्रति कभी भी सच्ची श्रद्धा नहीं कही जा सकती। हम रामायण पढ़ते हैं, राम की स्तुति करते हैं किंतु क्या हम राम जैसा जीवन जीने का भी प्रयास करते हैं? हम कृष्ण की बात करते हैं, गीता की बात करते हैं, उनकी पूजा करते हैं किंतु कृष्ण की तरह निर्लिप्त होकर संसार में रहने का प्रयास भी क्या कभी हम करते हैं? वास्तव में तो महापुरुषों का अनुकरण करना ही मुख्य बात है लेकिन वह नहीं करके उनके अनुयायी उन पर और उनके नाम पर, यश पर कब्जा करने के लिए आपस में झगड़ते रहते हैं। महात्मा गांधी के नाम पर वोट मांगने वाले नेतागण में से क्या कोई उनके जैसा जीवन भी जीता है? हम अपने को भी देखें तो तन सिंह जी, आयुवान सिंह जी आदि के विरोध में कोई बोलता है तो हम क्रोधित हो जाते हैं लेकिन क्या उनके जैसा जीवन बनाने के लिए भी हम उसी निष्ठा के साथ प्रयत्न करते हैं?

श्रद्धेय नारायण सिंह जी ने जिस प्रकार तन सिंह जी का अनुकरण किया क्या उसी प्रकार हम भी संघ शिक्षण को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करते हैं? संघ में जो महापुरुष हुए हैं उनका हमें अनुकरण करना है इसके लिए आवश्यक है कि हम अपना आकलन करते रहें। आत्मचिंतन ही संघ शिक्षण को अपने जीवन में उतारने का मार्ग है। आत्मचिंतन द्वारा जो करणीय कर्म हम निश्चित करते हैं उनको करने का बार-बार अभ्यास होना चाहिए और जो कर्म निषेधात्मक हैं, नहीं करने योग्य हैं उनके प्रति वैराग्य जागृत करना चाहिए। तत्पश्चात स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उन्होंने बताया कि हमें ना किसी के विरोध में उलझना है, ना स्वागत में, ना यश में। हमें निरंतर केवल अपना कर्म करते जाना है। विरोधी की बात को भी हमें सकारात्मक दृष्टिकोण से देखना चाहिए कि कहीं मुझ में ऐसी कोई कमी तो नहीं है जिसके कारण मेरा विरोध किया जा रहा है। ऐसी कमी को ढूंढ कर उसे दूर करना है। व्यक्तिगत विरोध को तो हमें इसी दृष्टिकोण से देखना है और सहन करना है लेकिन यदि कोई संघ पर या हमारे महापुरुषों पर उंगली उठाता है तो उसे समुचित प्रत्युत्तर भी दिया जाना चाहिए। संघ हमसे जो चाहता है वह हम करना प्रारंभ करते हैं तभी साधना में हमारी गति बन सकेगी अन्यथा हम एक ही स्थान पर खड़े-खड़े कदमताल करते रह जाएंगे। संघ का कार्य करते समय सदैव इसे अपना कर्तव्य मानें, कभी भी अहंकार को पनपने ना दें अन्यथा यह अहंकार दीमक बनकर हमारी साधना को खोखला कर देता है।

11 जुलाई को पूज्य तन सिंह जी की डायरी के अवतरण संख्या 132 पर चर्चा करते हुए माननीय महावीर सिंह जी ने बताया कि जब कोई व्यक्ति अपनी ईमानदारी से पागल हो जाता है अर्थात कुटुंब अथवा शिक्षक के साथ अपने संबंध को निरपेक्ष मान लेता है तो वह अपने अतिरिक्त सबको बेईमान मानकर सभी मर्यादाओं का उल्लंघन करने लगता है और स्वयं व कुटुंब दोनों का अहित करता है। उसकी स्थिति त्रिशंकु के समान हो जाती है जो ना अपने कुटुंब के साथ रह सकता है ना उससे अलग ही हो सकता है। परिवार के सदस्य के लिए यह समझना आवश्यक है कि परिवार हमारा है और हम परिवार के हैं लेकिन हम परिवार के सदस्य हैं किंतु परिवार हमारा सदस्य नहीं है। इस सिद्धांत का व्यवहारिक स्वरूप संघ में हमें स्पष्ट दिखाई देता है। संघ का हम अनुसरण करें, यह हमारा कर्तव्य है किंतु हमारा अनुसरण संघ करें - ऐसा दुराग्रह यदि हम करते हैं तो यहां से गड़बड़ प्रारंभ होती हैं। चाहे हम कार्यालय में हों, परिवार में हों अथवा किसी संस्था में हों, सभी स्थितियों में यह सिद्धांत लागू होता है। जब भी हम हमारी राय को माने जाने की हठधर्मी करने लगते हैं तो हम उस संस्था अथवा परिवार में विघटन के कारण बनते हैं। संघ में भी यदि किसी व्यक्ति का ऐसा दुराग्रह रहा है कि संघ को इस मार्ग से चलना चाहिए अथवा उस मार्ग से नहीं चलना चाहिए तो ऐसा व्यक्ति संघ में टिक नहीं सका है। शिक्षक हमारा मार्गदर्शक है, हमें उसका मार्गदर्शक बनने का हठ कभी नहीं करना चाहिए। ऐसा नहीं है कि शिक्षक शिक्षार्थी के जीवन से प्रेरणा नहीं ले सकता। अवश्य ही प्रत्येक शिक्षक अपने शिक्षार्थियों से बहुत कुछ सीखता है लेकिन यदि शिक्षार्थी इस दृष्टिकोण से सोचने लग जाए कि वह शिक्षक को सिखाने वाला है तो उसका विकास वहीं रुक जाता है। संघ तो नदी के एक प्रवाह की भांति है। यदि नदी में बहने वाले पानी का कोई अंश ऐसी जिद करे कि यह नदी तो गलत मार्ग से जा रही है और मुझे तो मरुस्थल वाले दूसरे मार्ग से जाना ठीक लगता है तो वह अंश मरुस्थल में ही सुख कर समाप्त हो जाएगा। ऐसी ही गति उस स्वयंसेवक की भी हो सकती है जो संघ के साथ चलने की बजाय संघ से अपने साथ चलने की अपेक्षा करता है। ऐसा व्यक्ति जो संघ के साथ नहीं चल सकता वह जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सफल नहीं हो सकेगा क्योंकि उसका दुराग्रह अन्य क्षेत्रों में भी बना ही रहेगा। इस प्रकार के दुराग्रह से व्यक्ति और संघ दोनों की हानि होती है। संघ की समाज के प्रति जो पीड़ा है उस पीड़ा से प्रभावित होकर जो संघ के साथ चलता है और इस दृष्टिकोण से संघ को समझता है, वही संघ का बन सकता है, उसके साथ चल सकता है। अवतरण की व्याख्या के पश्चात स्वयंसेवकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए महावीर सिंह जी ने बताया कि संघ एक परिवार की भांति हैं। इसलिए यदि हमारे मन में कोई बात आती है तो उसे अवश्य प्रकट करना चाहिए, लेकिन उसे माना ही जाना चाहिए ऐसा आग्रह कभी न करें। संघ में प्रत्येक स्वयंसेवक संघ प्रमुख की आंख के रूप में कार्य करता है इसलिए हमें कहीं भी कोई भी बात संघ के प्रतिकूल होती दिखाई देती है तो उसे हमारे वरिष्ठ तक अवश्य पहुंचाना चाहिए। लेकिन ऐसा शिकायत के भाव से नहीं करना चाहिए। साधना के मार्ग में शिकायत नहीं होती। संघ तो हमें अपना मानता ही है, चाहे कोई विरोधी भी हो तो उसे भी संघ अपना ही मानता है और उसके हितचिंतन के लिए तत्पर रहता है। लेकिन हमारा विकास इस बात पर निर्भर हैं कि संघ द्वारा दिए गए निर्देशों का हम कितना पालन करते हैं। हमें संघ मार्ग पर चलते हुए अपने और अन्यों के जीवन के अनुभवों से लाभ उठाना चाहिए और आत्म चिंतन और आत्मालोकन द्वारा अपनी कमियों को निरंतर दूर करते रहना चाहिए।

दौसा प्रांत का स्नेहमिलन

श्री क्षत्रिय युवक संघ के पूर्वी राजस्थान संभाग के दौसा प्रान्त का स्नेहमिलन 12 जुलाई को जामडोली में आयोजित हुआ। स्नेहमिलन में पूर्वी राजस्थान संभाग के संभाग प्रमुख मदन सिंह बामण्या, श्याम सिंह चिरनोटिया, विक्रम सिंह गुगुड़वार, नानू सिंह रुखसार, महादेव सिंह दांतली, लोकेन्द्र सिंह मलारना, दीपेंद्र सिंह मलारना, बीरबल सिंह बेहड़खो, मानस सिंह श्यामपुरा उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आगाज विधिवत रूप से यज्ञ हवन से किया गया। मदन सिंह बामण्या ने संघ का परिचय और संघ की कार्य शैली पर विस्तार से प्रकाश डाला और शाखा लगाने एवं शाखा में सहयोग करने पर जोर दिया।

अनुकरणीय पहल

अजमेर जिले के नलू गांव निवासी दशरथसिंह राठौड़ का 17 मई को देहावसान हो गया था। उनके पुत्र भंवरसिंह ने समाज की सहमति से अपने पिता का मृत्युभोज आदि नहीं किए एवं 50,000 रुपये स्वेच्छा से ग्राम विकास के लिए सुपूर्द करने का प्रस्ताव दिया। साथ ही उन्होंने समाज की शमशान भूमि पर टीन शैड लगाने का प्रस्ताव भी दिया। इससे पूर्व इन्होंने अपने पुत्र का विवाह भी टीका आदि रूढियों को नकार कर किया था।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

(पृष्ठ 3 से लगातार)

संभाग प्रमुख व प्रांत प्रमुख

11. संभाग- मेवाड़ मालवा

संभाग प्रमुख	श्री बृजराजसिंह खारड़ा
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. अजमेर	श्री विजयराजसिंह जालिया
2. भीलवाडा	श्री कानसिंह खारड़ा
3. चितौडगढ़	श्री जीवनसिंह नरधारी
4. मालवा	श्री गुमानसिंह वालाई
5. हाडौती	श्री वीरेंद्र सिंह तलावदा

12. संभाग- गोहिलवाड़

सभांग प्रमुख	श्री धर्मेन्द्रसिंह आमली
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. भावनगर शहर	श्री भागीरथसिंह सांड़खाखरा
2. भाल	श्री जयपालसिंह धोलेरा
3. मोरचंद	श्री अर्जुनसिंह मोरचंद
4. खोडियार	श्री मंगलसिंह धोलेरा

13. संभाग- सौराष्ट्र कच्छ

संभाग प्रमुख	श्री छन्नु भा पच्छेगाम
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. झालावाड़	श्री घनश्यामसिंह डेरवाला
2. कच्छ	श्री वनराज सिंह भैंसाणा
3. जूनागढ़	श्री करणसिंह पडुस्मा
4. राजकोट	श्री कृपाल सिंह लुणीवाव
5. जामनगर	श्री शक्ति सिंह कोटड़ानायाणी

14. संभाग- मध्य गुजरात

सभांग प्रमुख	श्री दीवानसिंह काणेटी
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. अमहदाबाद शहर	श्री दिग्विजय सिंह पलवाड़ा
2. अहमदाबाद ग्रामीण	श्री बटुकसिंह काणेटी
3. सूरत	श्री खेतसिंह चान्देसरा
4. गांधीनगर	श्री जगतसिंह वलासना
5. चरोत्तर	श्री अरविंद सिंह काणेटी

15. संभाग- उत्तर गुजरात

सभांग प्रमुख	श्री विक्रमसिंह कमाणा
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. मेहसाणा	श्री इन्द्रजीतसिंह जेतलवासना
2. बनासकांठा	श्री अजीतसिंह कुणघेर
3. साबरकांठा	श्री राजेंद्र सिंह भैंसाणा
4. पाटण	श्री धर्मेंद्र सिंह मोटीचंदूर

16.संभाग- महाराष्ट्र

सभांग प्रमुख	श्री नीरसिंह सिंघाणा
प्रांत व प्रांत प्रमुख	
1. मुबंई (उत्तर)	श्री रणजीतसिंह आलासन
2. मुंबई (दक्षिण)	श्री देवीसिंह झलोड़ा
3. पूणे	श्री रघुनाथसिंह बैण्यांकाबास
4. बैंगलोर	श्री पवनसिंह बिखरण्या

केन्द्रीय विभागों से संबंधित कार्यों में संभाग प्रमुखों के सहयोगी

जयपुर संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री रामसिंह अकदड़ा
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री सुधीर सिंह ठाकरियावास
लेखा व संयोमा विभाग	श्री भंवरसिंह बांजाकुड़ी
इतिहास विभाग	श्री अड़ीसाल सिंह लोहरवाड़ा
विस्तार विभाग	श्री योगेंद्र सिंह सुराणा
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री शंकरसिंह खानपुर
रिकॉर्ड विभाग	श्री मनमोहन सिंह महणसर
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री देवेंद्र सिंह बड़वाली
सोशल मीडिया विभाग	श्री आनंद सिंह आऊ
साहित्य विभाग	श्री जसवंतसिंह बुड़ीवाड़ा
महिला विभाग	श्री जितेंद्र सिंह सिसरवादा
संस्थान विभाग	श्री श्यामसिंह चिरनोटिया

पूर्वी राजस्थान संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री रेवतसिंह धीरा
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री गजराज सिंह पीपली
लेखा व संयोमा विभाग	श्री अर्जुन सिंह सिसरवादा
इतिहास विभाग	श्री महादेव सिंह दांतली
विस्तार विभाग	श्री लोकेंद्र सिंह मलारना
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री प्रभु सिंह हरनावा
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री देवराज सिंह मांडानी
सोशल मीडिया विभाग	श्री देवराज सिंह मांडानी
साहित्य विभाग	श्री मानवेन्द्र सिंह दांतली
महिला विभाग	श्री नानु सिंह रूखासर

नागौर संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री नत्थू सिंह छापड़ा
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री दशरथ सिंह ढींगसरी
लेखा व संयोमा विभाग	श्री नत्थू सिंह छापड़ा
इतिहास विभाग	श्री विक्रम सिंह ढींगसरी
विस्तार विभाग	श्री नरपत सिंह रताऊ
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री श्याम सिंह छापड़ा
रिकार्ड विभाग	श्री शिवराज सिंह आसरवा
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री महेंद्र सिंह नाथावतपुरा
सोशल मीडिया विभाग	श्री दीपेंद्र सिंह पलाड़ा
साहित्य विभाग	श्री जुगराज सिंह जूलियासर
महिला विभाग	श्री घीसु सिंह कासली
संस्थान विभाग	श्री शिम्भु सिंह आसरवा

बीकानेर संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री शक्ति सिंह आशापुरा
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री करणीसिंह भेलु
लेखा व संयोमा विभाग	श्री जगतसिंह रेड़ा
इतिहास विभाग	श्री खींव सिंह सुल्ताना
विस्तार विभाग	श्री दयालसिंह किशोरपुरा
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री हनुवंतसिंह आशापुरा
रिकॉर्ड विभाग	श्री चितरंजन सिंह आलसर
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री जेठुसिंह पुंदलसर
सोशल मीडिया विभाग	श्री विजयसिंह झंझेऊ
साहित्य विभाग	श्री राजेंद्र सिंह आलसर
महिला विभाग	श्री भंवरसिंह उदट
संस्थान विभाग	श्री ईश्वरसिंह चनाणा

बाड़मेर संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री राजेंद्र सिंह भिंयाड़ (द्वितीय)
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री हरिसिंह उण्डखा
लेखा व संयोमा विभाग	श्री हीरसिंह सणाऊ
इतिहास विभाग	श्री कमलसिंह गेंहू
विस्तार विभाग	श्री गणपतसिंह हुरींकातला
रिकॉर्ड विभाग	श्री अशोक सिंह भीखसर
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री विजयसिंह माडपुरा
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री भगवानसिंह दूधवा
सोशल मीडिया विभाग	श्री देवीसिंह राणीगांव
साहित्य	श्री स्वरूप सिंह मूंगेरिया
महिला विभाग	श्री देवीसिंह ताणु
संस्थान विभाग	श्री बाबूसिंह सरली

बालोतरा संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री भैंरुसिंह पादरु
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री राणसिंह टापरा
लेखा व संयोमा विभाग	श्री सोहनसिंह कालेवा
इतिहास विभाग	श्री करणसिंह दूधवा
विस्तार विभाग	श्री वीरसिंह इन्द्राणा
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री मनोहर सिंह सिणेर
रिकॉर्ड विभाग	श्री चंदनसिंह थोब
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री गोविंद सिंह गूगड़ी
सोशल मीडिया विभाग	श्री दौलत सिंह मूंगेरिया
साहित्य विभाग	श्री हणवंतसिंह मवड़ी
महिला विभाग	श्री छतरसिंह देवंदी

जैसलमेर संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री नरपतसिंह राजगढ़
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री पदमसिंह रामगढ
लेखा व संयोमा विभाग	श्री भवानीसिंह मूंगेरिया
इतिहास विभाग	श्री रतनसिंह बडोड़ागांव
विस्तार विभाग	श्री मेहराजसिंह सांकड़ा
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री उम्मेदसिंह बडोड़ागांव
रिकॉर्ड विभाग	श्री सांवलसिंह मोढ़ा
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री भोजराज सिंह तेजमालता
सोशल मीडिया विभाग	श्री हिंदु सिंह म्याजलार
साहित्य विभाग	श्री कंवराजसिंह सेतरावा
महिला विभाग	श्री बाबूसिंह बेरसियाला
संस्थान विभाग	श्री नरेन्द्र सिंह तेजमालता

जोधपुर संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री भवानी सिंह पीलवा
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री भगवान सिंह बेलवा
लेखा व संयोमा विभाग	श्री गेनसिंह चान्दनी
इतिहास विभाग	श्री उम्मेदसिंह सेतरावा
विस्तार विभाग	श्री चन्द्रवीर सिंह भालू
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री गेन सिंह चान्दनी
रिकॉर्ड विभाग	श्री रूप सिंह परेऊ
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री मूल सिंह बेतिणा
सोशल मीडिया विभाग	श्री प्रेम सिंह पाँचला
साहित्य विभाग	श्री नखत सिंह बेदु
महिला विभाग	श्री भोम सिंह सेतरावा
संस्थान विभाग	श्री गोपाल सिंह मूंगेरिया

(शेष पृष्ठ 7 पर)

(पृष्ठ 6 से लगातार)

केन्द्रीय विभागों से संबंधित कार्यों में संभाग प्रमुखों के सहयोगी

जालोर संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री हीर सिंह लोडता
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री नाहर सिंह जाखड़ी
लेखा व संयोमा विभाग	श्री अर्जुनसिंह देलदरी
इतिहास विभाग	श्री वीरबहादुर सिंह असाडा
विस्तार विभाग	श्री गणपत सिंह भँवरानी
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री मदन सिंह थुम्बा
रिकॉर्ड विभाग	श्री राजेन्द्र सिंह भँवरानी
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री अमर सिंह चांदना
सोशल मिडिया विभाग	श्री देवराज सिंह मांडानी
साहित्य विभाग	श्री खुमान सिंह दुदिया
महिला विभाग	श्री डूंगर सिंह पुनासा (जालोर) श्री सुमेर सिंह उथमण (सिरोही) श्री करण सिंह लोडता(पाली)

मेवाड़ मालवा संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री जीवनसिंह नरधारी
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री दिलीपसिंह रूद
लेखा व संयोमा विभाग	श्री चन्द्रसेन सिंह रूद
इतिहास विभाग	श्री नरेंद्र सिंह नरधारी
विस्तार विभाग	श्री वीरेंद्र सिंह तलावदा श्री शिवदयाल सिंह खूड़ी
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री विजयराजसिंह जालिया
रिकॉर्ड विभाग	श्री कानसिंह खारड़ा
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री नरेन्द्र सिंह नरधारी
सोशल मीडिया विभाग	श्री लक्ष्मणसिंह बाढ़ा पिच्याणोत
साहित्य विभाग	श्री लक्ष्मणसिंह भाटियों का खेड़ा
महिला विभाग	श्री किशोरसिंह देवलिया

मेवाड़ वागड़ संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री टैंकबहादूर सिंह गेंहुवाड़ा
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री अरविंद सिंह गेंहुवाड़ा
लेखा व संयोमा विभाग	श्री दिग्विजयसिंह लांबापारड़ा
इतिहास विभाग	श्री कमलसिंह बेमला श्री पृथ्वीराज सिंह लांबापारड़ा
विस्तार विभाग	श्री लाखनसिंह लांबापारड़ा श्री सवाईसिंह बिजेरी द्वितीय
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री सुरेन्द्र सिंह रोलसाहबसर
रिकॉर्ड विभाग	श्री डिगेन्द्र प्रतापसिंह बेमला
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री भगतसिंह बेमला
सोशल मीडिया विभाग	श्री हरिश्चंद्र सिंह गनोड़ा
साहित्य विभाग	श्री फतेहसिंह भटवाड़ा
महिला विभाग	श्री गुमानसिंह वालाई

गोहिलवाड़ संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	भगीरथसिंह सांडखाखरा
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री छन्नु भा पच्छेगाम
लेखा व संयोमा विभाग	श्री भूरूभा मोढ़वाणा
इतिहास विभाग	श्री चन्द्रसिंह खंडेरा
विस्तार विभाग	श्री मंगलसिंह धोलेरा
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री हरपालसिंह धोलेरा
रिकॉर्ड विभाग	श्री अजयसिंह अवाणिया
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री अजीतसिंह थलसर
सोशल मीडिया विभाग	श्री जयपालसिंह धोलेरा
साहित्य विभाग	श्री प्रवीणसिंह धोलेरा
महिला विभाग	श्री कृष्ण सिंह थलसर
संस्थान विभाग	श्री भूरूभा मोढ़वाणा

मध्य गुजरात संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री अजीतसिंह कुकनवाली
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री महावीर सिंह देनोक
लेखा व संयोमा विभाग	श्री देवेंद्र सिंह काणेटी
इतिहास विभाग	श्री भवानीसिंह माडपुरिया
विस्तार विभाग	श्री दिलीप सिंह गड़ा श्री विजय सिंह काणेटी
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री क्रिपालसिंह काणेटी श्री मनोहर सिंह दुजार
रिकॉर्ड विभाग	श्री मनोहर सिंह मिठौड़ा
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री दिग्विजयसिंह पलवाड़ा
सोशल मीडिया विभाग	श्री अर्जुन सिंह काणेटी
साहित्य विभाग	श्री अनीरुध सिंह काणेटी
महिला विभाग	श्री केसुभा काणेटी

उत्तर गुजरात संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री अजीतसिंह कुणघेर
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री छैलसिंह वलादर
लेखा व संयोमा विभाग	श्री कानसिंह चारड़ा
इतिहास विभाग	श्री अरविंद सिंह नारोली
विस्तार विभाग	श्री रणजीत सिंह नंदाली
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री दिग्विजय सिंह अंबोड
रिकॉर्ड विभाग	श्री हरिसिंह समौ
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री महावीर सिंह हरदासकाबास
सोशल मीडिया विभाग	श्री जयसिंह कमाणा
साहित्य विभाग	श्री शैतानसिंह चारड़ा
महिला विभाग	श्री विक्रमसिंह कमाना

सौराष्ट्र कच्छ संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री रघुवीर सिंह मोढ़वाणा
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री सहदेवसिंह मूली
लेखा व संयोमा विभाग	श्री भुरूभा मोढ़वाणा
इतिहास विभाग	श्री राजेन्द्र सिंह घणाद
विस्तार विभाग	श्री कृष्णसिंह थलसर
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री हरपालसिंह धोलेरा
रिकॉर्ड विभाग	श्री जयेंद्र सिंह कोटड़ा
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री शक्तिसिंह कोटड़ा
सोशल मीडिया विभाग	श्री दिव्यराज सिंह धोलेरा
साहित्य विभाग	श्री सुरेन्द्र सिंह भद्रेसर
महिला विभाग	श्री वनराज सिंह चूड़ी
संस्थान विभाग	श्री भुरूभा मोढ़वाणा

महाराष्ट्र संभाग

शिविर विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री रणजीतसिंह चौक
शाखा विभाग (लेखा व शिक्षण)	श्री नेपाल सिंह गोला
लेखा व संयोमा विभाग	श्री पाबुदान सिंह दौलतपुरा
विस्तार विभाग	श्री भागीरथ सिंह लुणोल
ग्राहक सदस्यता विभाग	श्री वाघसिंह लोहिड़ी
रिकॉर्ड विभाग	श्री देवीसिंह झलोड़ा
समाचार, लेख व विज्ञापन विभाग	श्री नाथुसिंह काठाड़ी
सोशल मीडिया विभाग	श्री ओंकार सिंह पांचोटा
साहित्य विभाग	श्री शंभूसिंह धीरा
महिला विभाग	श्री पाबुदान सिंह दौलतपुरा

नोट : महिला विभाग के संभागीय प्रभारी बालिका शिविरों व शाखाओं के व्यवस्था संबंधी दायित्व संभालेंगे। बालिका शिविरों के शिक्षण का दायित्व केन्द्रीय महिला विभाग के निर्देशन में महिला प्रशिक्षिकाएं निभाएंगी।

(पृष्ठ एक का शेष)

संघ में पीढ़ी...

श्री लक्ष्मणसिंह पहले मुख्य कार्यकारी के रूप में एवं विगत 3 वर्षों से संचालन प्रमुख के रूप में वैसे ही आप सबके साथ काम कर रहे हैं, अब वे संघप्रमुख के रूप में संघ का नेतृत्व करेंगे, आप सब मेरी ही भांति इनका सक्रिय सहयोग करें।

इसी बैठक में सत्र 2021-22 के लिए संगठनात्मक स्वरूप का निर्धारण किया गया एवं सहयोगी नियुक्त किए गये। नये संगठनात्मक स्वरूप में 6 केन्द्रीय कार्यकारी नियुक्त किए गये तथा संघ कार्य से संबंधित विभिन्न विषयों को 6 समूहों में सुचीबद्ध कर प्रत्येक समूह का एक एक कार्यकारी को दायित्व दिया गया। केन्द्रीय कार्यकारियों के सहयोग के लिए 11 केन्द्रीय विभाग बनाए गये एवं उनके प्रभारी तय कर कार्य निर्धारित किए गए। वर्तमान में संघ के संपूर्ण कार्यक्षेत्र को 16 संभागों में बांटकर उनके संभाग प्रमुख तय किए गये। संभागों को पुनः प्रांतों में विभक्त कर उनमें प्रांत प्रमुखों के नाम तय किए गये। इस सत्र में कुल 74 प्रांत बनाये गये हैं। इसी प्रकार केन्द्रीय विभागों की तर्ज पर प्रत्येक संभाग में संभाग प्रमुखों के सहयोग के लिए संभागीय सहयोगी भी तय किए गये। बैठक में संभाग प्रमुखों से आगामी दिनों में संभागीय बैठकें कर मंडल प्रमुख व अन्य प्रांतीय सहयोगी तय करने को कहा गया।

बैठक में उपस्थित सहयोगियों को संबोधित करते हुए माननीय संघप्रमुख श्री ने कहा कि संघर्ष हमारे सामने चुनौती पैदा करते हैं और इन चुनौतियों को स्वीकार करने पर भीतर की सोई हुई शक्तियां जागृत होती हैं। संघर्ष के क्षण असाधारण क्षण होते हैं जिनमें हम संपूर्ण क्षमताओं के साथ क्रियाशील होते हैं और प्रगति के मार्ग में छलांग लगा लेते हैं इसलिए जीवन में आने वाले हर संघर्ष का स्वागत करें और प्रगति का मार्ग प्रशस्त करें।

उन्होंने कहा कि व्यक्ति को जितना ऊंचाई की ओर जाना होता है उतना ही गहराई की ओर भी जाना होता है। गहराई और ऊंचाई एक दूसरे की विलोम नहीं बल्कि समानुपाती हैं। हमें यह समानुपात बनाये रखते हुए संघ मार्ग पर आने वाले संघर्षों को सहर्ष स्वीकार करना है और प्रगति के पथ पर छलांग लगानी है।

'शख्सियत की कहानी, उन्हीं की जुबानी' की अगली कड़ी

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा हमारे समाज की शख्सियतों के साक्षात्कार की श्रृंखला 'शख्सियत की कहानी, उन्हीं की जूबानी' की अगली कड़ी में 11 जुलाई को सेवानिवृत्त ले. जनरल दलीप सिंह के साक्षात्कार का फाउंडेशन के युट्यूब चैनल पर लाईव प्रसारण किया गया। आप सेना में विभिन्न पदों पर रहते हुए विगत वर्ष सेवानिवृत्त हुए हैं। आपको सेना में उत्कृष सेवाओं के लिए विशिष्ट सेवा मैडल एवं परम विशिष्ट सेवा मैडल से नवाजा गया है। आपने अपने साक्षात्कार में हरसोलाव गांव से भारतीय सेना के दूसरे बड़े पद तक की यात्रा का विवरण विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से बताया। साक्षात्कार के दौरान आपने युवाओं के सेना के प्रति आकर्षण, सेना में पदोन्नति की संभावनाओं, सेना में सेवारत रहते हुए शिक्षा, शोर्ट सर्विस कमीशन, सेना में अफसर बनने के अवसरों आदि सभी विषयों पर विस्तार से बताया। आपने बताया कि प्रायः यह प्रचारित है कि फौज में अफसरों की कमी है जो सही भी है लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि लोग आना नहीं चाह रहे हैं, भरपूर आवेदन आते हैं लेकिन फौज की अहर्ताओं के अनुरूप योग्य लोग उपलब्ध नहीं हो पाते। आपने बताया कि फौज में अफसर बनने का महत्वपूर्ण स्टेज एस एस बी साक्षात्कार होता है जिसमें 5 दिन तक संबंधित अभ्यर्थी की विभिन्न पहलुओं से जांच की जाती है और योग्य अभ्यर्थी ही चयनित होता है। उन्होंने बताया कि सिपाही भर्ती में किसी भी प्रकार के दलालों से बचना चाहिए क्योंकि फौज में भर्ती में ऐसे हस्तक्षेप की नगण्य संभावनाएं होती हैं। समाज के लोगों को संदेश देते हुए उन्होंने कहा कि हमें हमारे गौरवपूर्ण इतिहास से प्रेरणा लेनी चाहिए। समाज के हर महापुरुष के पीछे का बड़ा कारण मां या पत्नी के रूप में एक क्षत्राणी होती है इसलिए हमें हमारी बालिकाओं को श्रेष्ठ क्षत्राणियां बनने का शिक्षण व प्रशिक्षण देना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह सामान्य नियम है कि सफलता का कोई शोर्टकट नहीं होता और दृढ निश्चय व कठोर परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है। सकारात्मक सोच के महत्व के बारे में उन्होंने बताया कि हम किसी भी चुनौती का बहाना न ढूंढें। हर बहाना हमारे संकल्प को चलायमान करता है इसलिए सदैव सकारात्मक रहते हुए संकल्प को दृढ बनाये रखें। आपने बताया कि सेवानिवृत्ति के पश्चात आपने औरंगजेब के काल में उसकी आततायी नीतियों के प्रतिरोध के अनजाने योद्धाओं पर एक पुस्तक लिखी है जिसे शीघ्र ही प्रकाशित करवाया जाएगा।

गुजरात के संभागों में संपर्क यात्रा का आयोजन

उत्तर गुजरात संभाग के सिद्धपुर स्थित वालकेश्वर महादेव मंदिर में 27 जून को संघ तीर्थदर्शन कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसमें मेहसाणा, बनासकांठा और साबरकांठा प्रांत के स्वयंसेवक तथा सहयोगी सम्मिलित हुए। संभाग प्रमुख विक्रम सिंह कमाना ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि कोरोना महामारी से उपजी परिस्थितियों के कारण कार्य की गति में जो ठहराव आया था उसकी भरपाई करने के लिए हमें अब दोगुनी रफ्तार से संघकार्य करना होगा। हीरक जयंती वर्ष के अंतर्गत संघ की बात को गांव-गांव तक पहुंचाने के लिए हमें प्रयत्न करना है। कार्यक्रम के दौरान अजीत सिंह कुणघेर और इंद्रजीत सिंह जेतलवासना ने भी अपने विचार रखें। करण सिंह पडूस्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा रणजीत सिंह नंदाली, रोहित सिंह खिलोड़ व गोपाल सिंह खोलवाड़ा ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। इसी प्रकार मध्य गुजरात संभाग के गांधीनगर प्रांत में बैठक तथा संपर्क यात्रा का आयोजन किया गया। 3 जुलाई को गांधीनगर स्थित स्वर्णिम पार्क में बैठक का आयोजन हुआ जिसमें करण सिंह पडूस्मा ने उपस्थित स्वयंसेवकों से गांधीनगर में साप्ताहिक शाखा शुरू करने के संबंध में चर्चा की। अगले दिन 4 जुलाई को पीथापुर, लेखावाडा, पालज और माणसा गांवों में संपर्क यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें करण सिंह पडूस्मा, रणजीत सिंह नंदाली, पूर्णचंद्र सिंह छेलीगोड़ी, जयदीप सिंह अवणियां, केतन सिंह नंदाली, अनिरुद्ध सिंह पडूस्मा, इंद्रजीत सिंह जेतलवासना ने भाग लिया। यात्रा के दौरान ग्रामवासियों से संपर्क करके उन्हें श्री क्षत्रिय युवक संघ, उसकी गतिविधियों और हीरक जयंती वर्ष के संबंध में जानकारी दी गई। गुजरात के गांधीनगर प्रान्त के बालवा स्थित गोगा महाराज के मंदिर में 11 जुलाई को हीरक जयन्ती वर्ष के अंतर्गत चिंतन बैठक का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के दौरान जयदीप सिंह अवाणियां, पूरण सिंह छेलीगोड़ी तथा प्रवीण सिंह मेता ने उपस्थित समाजबंधुओं को श्री क्षत्रिय युवक संघ और हीरक जयन्ती वर्ष के संबंध में जानकारी प्रदान की। विक्रम सिंह अहमदाबाद ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा अमित सिंह बालवा ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

ले. जनरल हणुतसिंह जसोल की जयंती मनाई

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा लगाई जाने वाली नित्य शाखा में 6 जुलाई की रात 8.45 बजे संत शूरमा ले. जनरल हणुतसिंह जसोल की जयंती वर्चुअल माध्यम से मनाई गई। कार्यक्रम में नित्य शाखा में जुड़ने वाले स्वयंसेवकों के अलावा भी विभिन्न क्षेत्रों से लोग जुड़े। फाउंडेशन के केन्द्रीय सहयोगी महेन्द्रसिंह तारातरा ने जनरल साहब का परिचय प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हम हमारी कौम के ऐसे नायक की जयंती मना रहे हैं जिसे दुश्मन देश ने भी 'फख्रे हिंद' की उपाधि प्रदान की। उन्होंने बसंतर के युद्ध में जनरल साहब के नेतृत्व में मिली चमत्कारिक विजय एवं तदंतर युद्धाभ्यास के दौरान दुश्मन देश की सीमा में 100 किमी तक जाकर सुरक्षित लौट आने की घटना का विवरण देते हुए उनकी अद्भुत नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। सिक्किम में पदस्थापन के दौरान उनकी व्यवसायिक प्रतिबद्धता के अनुठे उदाहरणों की भी चर्चा की गई। कार्यक्रम में जनरल साहब के परिवार के सदस्य एवं अंतिम समय में उनकी सेवा में रहे नृपेंद्रकरण जी ने उनके आध्यात्मिक जीवन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वे 1971 के युद्ध के बाद ही सेवानिवृत्त होना चाहते थे लेकिन उनके गुरुजी ने उन्हें सेवा में रहते हुए कर्तव्य पालन के साथ साथ आध्यात्मिक साधना का उदाहरण बनने का आदेश दिया और उन्होंने उस आदेश का पालन किया। वे संसार में संत जनरल के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने कहा कि जनरल साहब उनके गुरुजी एवं अद्वितीय विभूति बाला सती जी बावजी के आध्यात्मिक जीवन का प्रकट स्वरूप थे। उन्हें दोनों ही महापुरुषों का निकटतम सानिध्य एवं मार्गदर्शन मिला। सेवा में रहते हुए वे प्रतिवर्ष दोनों के पास एक एक माह रुक कर उनके मार्गदर्शन में साधना किया करते थे। सेवानिवृत्ति के बाद वे देहरादून में अपने गुरुजी के आश्रम में ही रहने लगे और बाला भी पधारते रहते थे। नृपेंद्रकरण जी ने तीनों महापुरुषों से संबंधित विभिन्न घटनाओं का वर्णन करते हुए कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की। उन्होंने बताया कि जनरल साहब ने अपना शरीर समाधि के दौरान ही त्याग कर अनंत की यात्रा में प्रस्थान किया। नृपेन्द्रकरण जी ने अपनी बात साक्षात्कार के स्वरूप में कही। फाउंडेशन के केन्द्रीय सहयोगी यशवर्धन सिंह ने जनरल साहब व सती जी बावजी के बारे में प्रश्न पूछे एवं उन्होंने जबाब देकर बातचीत को आगे बढ़ाया।

भाजपा नेताओं ने की शिष्टाचार भेंट

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश मंत्री श्रवणसिंह बगड़ी अपने बाड़मेर प्रवास के दौरान संघ के संरक्षक माननीय भगवान सिंह रोलसाहबसर से शिष्टाचार भेंट कर आशीर्वाद लेने पहुंचे। इस अवसर पर उनके साथ बाड़मेर भाजपा के जिलाध्यक्ष आदुराम मेघवाल व अन्य स्थानीय नेता भी साथ रहे। माननीय संरक्षक महोदय ने सबकी कुशल क्षेम पहुंची एवं विभिन्न राजनीतिक विषयों पर सामान्य चर्चा की।

श्री हिम्मत राजपूत छात्रावास डीडवाना के कार्यकारिणी चुनाव

श्री हिम्मत राजपूत छात्रावास मैनेजिंग कमेटी डीडवाना की कार्यकारिणी के चुनाव श्री वीर दुगार्दास राजपूत सभा भवन डीडवाना में 4 जुलाई को संपन्न हुए। इन चुनावों में श्री क्षत्रिय युवक संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवत सिंह सिंह सिंघाणा ने अध्यक्ष पद हेतु रघुवीर सिंह चौमू, कोषाध्यक्ष पद हेतु जीवराज सिंह देवराठी तथा महासचिव पद हेतु रणवीर सिंह खरेश के नाम का प्रस्ताव रखा। सन 1940 से लगातार राजपूत समाज डीडवाना इस कमेटी के निर्वाचन को निर्विरोध करवाता आ रहा है और अबकी बार भी समाज के प्रबुद्धजनों की मौजूदगी में निर्वाचन निर्विरोध संपन्न हुआ। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का माला और साफा पहनाकर स्वागत किया गया।

भूपेंद्र सिंह शेखावत बने ग्रेट चैंपियन

भूपेंद्र सिंह शेखावत को उनके प्रदर्शन के लिए भास्कर ग्रुप द्वारा ग्रेट चैंपियन से सम्मानित किया गया है। भूपेंद्र ने अपने करियर की शुरूआत भास्कर के साथ मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव के रूप में की थी। अपनी कड़ी मेहनत और अथक प्रयासों के कारण आज वे भास्कर समूह के एक कार्यक्षेत्र के राष्ट्रीय प्रमुख तक पहुँच गए हैं। वे चुरू जिले के एक छोटे से गांव धोधलिया के रहने वाले हैं। उनके सक्षम नेतृत्व गुणों के कारण इससे पहले भी कई मौकों पर उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

मोरचंद शाखा ने किया साहित्य भेंट

संघ के गोहिलवाड़ संभाग के मोरचंद प्रांत की मोरचंद शाखा ने उनके गांव में आये अतिथियों को श्री क्षत्रिय युवक संघ का साहित्य व यथार्थ गीता भेंट की।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org